जून: 2023

वर्ष : 6 अंक : 9

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"॥आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्॥" अर्थात स्वास्थ्य हमारी सबसे बड़ी पूंजी है।

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का जून 2023 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में मई, 2023 में संस्थान की गतिविधियों को दिखाया गया है।

जून का महीना कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को लेकर आता है जैसे, विश्व पर्यावरण दिवस, फादर्स डे, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आदि। जून को स्वास्थ्य जागरूकता माह के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि इस महीने हम प्रति वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाते हैं, जिसका उद्देश्य दुनिया भर में योगाभ्यास के लाभ के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का कारण यह है कि इस दिन ग्रीष्म संक्रांति होती है और यह भारत में दिन के उजाले की सबसे लंबी अवधि वाला दिन होता है।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर डा. बि. के. दास को मात्स्यिकी क्षेत्र में उनके उत्कृष्ठ योगदान के लिए जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के द्वारा सम्मान

हमारा देश भारत संस्कृति, भाषा, वेश-भूषा आदि के साथ-साथ जलवायु के तौर पर भी विविधताओं से भरपूर है। एक ओर जहां राजस्थान की तपती गर्मी और मरुभूमि है तो दूसरी ओर लद्दाख और पूर्वोत्तर जैसे शीत प्रदेश। इस देश की कलात्मक, भौतिक और आध्यात्मिक सुंदरता और विविधता ने विदेशों को भी मोहित किया है इसलिए यह देश विदेशी पर्यटकों के लिए हमेशा ही एक आकर्षण का केंद्र बना रहा। इसी क्रम में यदि धरती का स्वर्ग जैसे स्थान का जिक्र हो तो हमारे ध्यान में केवल एक नाम आता है और वह है- कश्मीर की सुंदर और मनोरम घाटी। अपनी सुंदरता और मनोहर परिवेश के कारण कश्मीर को भारत का स्विट्जरलैंड भी कहा जाता है। यहां पर पूरे वर्ष बर्फ पड़ती रहती है और यह प्रदेश हिमालय की ऊंची-ऊंची चोटियों, ग्लेशियर, नदियां, सदाबहार वन, ताजी हवा इत्यादि से भरा-पूरा है। कश्मीर का मौसम हमेशा सुहावना रहता है। गर्मी में अधिकतर समय यहां पर बहुत ही अच्छी हरियाली छाई रहती है,ऐसा लगता है कि मानो कश्मीर के ऊपर कोई सफेद चादर ढकी हुई है। यहां पर सबसे ज्यादा सेब के पेड़ दिखाई देते हैं। यहां पर बहुत सारे सरोवर हैं, जिसकी वजह से कश्मीर की सुंदरता में चार चांद लग जाते हैं।

कश्मीर के इन्ही सुंदर वादियों में कश्मीर विश्वविद्यालय ने विश्व पर्यावरण के परिपेक्ष्य में जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (जेडएसआई) के सहयोग से 'वैश्विक पर्यावरण में बदलती परिस्थितियाँ: चुनौतियां और समाधान' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन दिनांक 5-7 जून 2023 को आयोजित किया। इसमें जम्मू-कश्मीर स्थित कई विश्वविद्यालयों के कुलपति और देश के प्रतिष्ठित संस्थानों के शिक्षाविद उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे। इस सम्मेलन में वर्तमान और ज्वलंत पर्यावरणीय विषयों जैसे जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता में ह्रास, वनों की कटाई, महासागरों के अम्लीय स्तर में वृद्धि, प्रदूषण, स्वच्छ, हरित और टिकाऊ कृषि तथा पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, ऊर्जा-कुशल प्रौद्योगिकियों, टिकाऊ कृषि और अपशिष्ट प्रबंधन सहित विभिन्न समाधानों पर प्रकाश डाला गया ।

उद्घाटन सत्र में कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो नीलोफर खान ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 34वीं अखिल भारतीय जूलॉजी कांग्रेस के आयोजन के लिए जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (जेडएसआई) को बधाई दी। इस अवसर पर जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर उमेश राय; जम्मू क्लस्टर विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर बेचन लाल; अध्यक्ष, जेडएसआई, प्रोफेसर बी एन पांडे; पूर्व अध्यक्ष, भारतीय कांग्रेस संस्था, प्रोफेसर विजय लक्ष्मी सक्सेना; आयुक्त/सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, जम्मू-कश्मीर; श्री सौरभ भगत, आईएएस; रजिस्ट्रार कश्मीर विश्वविद्यालय, डॉ. निसार ए मीर; जेडएसआई के महासचिव, प्रोफेसर कमल जयसवाल और कश्मीर विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग के प्रमुख और सम्मेलन के संयोजक प्रोफेसर फैयाज अहमद उद्घाटन सत्र में उपस्थित थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में, प्रो नीलोफर ने युवा छात्रों से पर्यावरण संरक्षण की वैश्विक लड़ाई और समाज में "पर्यावरण चेतना" को बढ़ावा देने में सहयोग करने का आग्रह किया। प्रोफेसर निलोफर ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के विश्वविद्यालय क्षेत्र में नई पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए नवीन समाधान खोजने के लिए सहयोग कर सकते हैं। जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (जेडएसआई) के प्रोफेसर बीएन पांडे ने अपने विशेष संबोधन में युवा छात्रों से पर्यावरण की उत्पत्ति को समझने और उसके संरक्षण में मदद करने का आग्रह किया।

प्रोफेसर उमेश राय ने कहा कि नई पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए अकादमिक विषयों को किसी सीमा क्षेत्र में ना बांध कर इन सभी के बीच एक तारतम्य स्थापित करना चाहिए। प्रोफेसर बेचन लाल ने युवा छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते हुए एक संभावना व्यक्त किया कि अगले 40 वर्षों में वशविक जलवायु उष्मिकरण और जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्य आपूर्ति 40% तक कम हो सकती है । श्री सौरभ भगत, आईएएस ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने अपशिष्ट-से-ऊर्जा अनुसंधान और समाधान पर अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) के लिए पांच करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं और छात्रों और शिक्षकों से इस परियोजना प्रस्ताव के कार्यान्वयन में संयुक्त तौर पर आने का आग्रह किया

प्रोफेसर विजय लक्ष्मी ने कहा कि सतत विकास केवल "पर्यावरण के साथ समाज के सामंजस्य" से ही संभव है। डॉ. निसार ए मीर ने विश्वविद्यालय के पर्यावरण संरक्षण पहल पर प्रकाश डाला। यह सम्मेलन देशभर के 20 संस्थानों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं को पटल पर ले कर आया है। इस कार्यक्रम में अनुसंधान और शिक्षाविदों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए अभिनंदन भी किया गया। इस सम्मेलन में हमारे संस्थान के निदेशक, डा बि के दास को मात्स्यिकी क्षेत्र में उनके उत्कृष्ठ योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

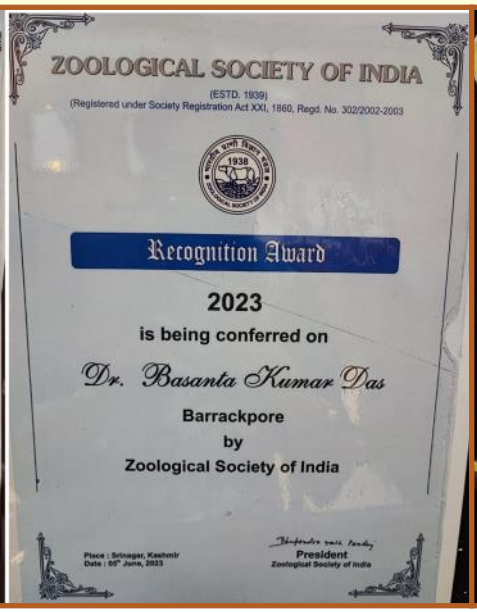

संस्थान ने पश्चिम बंगाल के शेराफुली घाट पर बुद्ध पूर्णिमा के शुभ अवसर पर दो लाख भारतीय प्रमुख कार्प की अंगुलिकाओं को प्रवाहित किया

पवित्र बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर, 5 मई 2023 को शेराफुली घाट, बैरकपुर, पश्चिम बंगाल में नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत आईसीएआर- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा 'राष्ट्रीय नदी मत्स्य पालन कार्यक्रम -2023' का आयोजन किया गया। नदी मत्स्य पालन कार्यक्रम 5 अप्रैल 2023 को नबद्वीप, पश्चिम बंगाल से शुरू किया गया था, यह कार्यक्रम 3 अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग हिस्सों में चलाया गया था।

अब तक अप्रैल से मई, 2023 की अवधि के दौरान 22 लाख के लक्ष्य के साथ 7 लाख से अधिक मछली अंगुलिकाओं को प्रवाहित किया गया है। वर्तमान रेन्चिंग,राष्ट्रीय नदी रेन्चिंग के दूसरे संस्करण के दौरान गंगा नदी के निचले हिस्से में पहला कार्यक्रम था। संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास, डॉ. हरचरण सिंह (सलाहकार एनएमसीजी), और संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों द्वारा भारतीय मेजर कार्प्स की कुल 2.0 लाख उन्नत अंगुलिकाओं (> 150 मिमी) को नदी में छोड़ा गया। इसके अलावा, प्रजातियों के प्रवासी मार्ग को समझने के लिए नदी में 500 ग्राम के औसत आकार के साथ 75 भारतीय प्रमुख कार्प को टैग किया गया था। बैरकपुर के मोनीरामपुर नौका घाट पर स्थानीय निवासियों और मछुआरों के बीच जागरूकता अभियान भी चलाया गया।

आईसीएआर- सिफ़री ने नेशनल रैन्चिग कार्यक्रण के रूप में बाली, बेलूर, में 2.5 लाख भारतीय मेजर कार्प छोडा

आईसीएआर- केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री), बैरकपुर ने "नमामि गंगे" कार्यक्रम के तहत 6 मई 2023 को पवित्र बेलूर मठ के बरेंद्रपारा घाट, बाली, हावड़ा, पश्चिम बंगाल में "नेशनल रैन्चिंग कार्यक्रम-2023" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की शुरुआत 5 अप्रैल 2023 को नवद्वीप, पश्चिम बंगाल से हुई थी। यह कार्यक्रम 3 अलग-अलग राज्यों में फैले अलग-अलग जगहों में आयोजित किया जा रहा हैं । अब तक अप्रैल से मई, 2023 की अवधि के दौरान 22 लाख के लक्ष्य के साथ 9.0 लाख से अधिक अंगुलिमीनों को गंगा में छोड़ा गया है। इस कार्यक्रम में सिफ़री ने 2.5 लाख उन्नत भारतीय मेजर कार्प के अंगुलिमीनों (> 150 मिमी) को गंगा में निषेचित किया। स्वामी राशबिहारी महाराज जी (बेलूर मठ, रामकृष्ण मिशन और रामकृष्ण मठ) के करकमलों से यह कार्यक्रम आरंभ हुआ , सिफ़री के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास इस कार्यक्रम में मौजूद थे। स्वामी जी ने हमारे दैनिक जीवन में गंगा नदी के महत्व पर प्रकाश डाला और मछुआरों से गंगा नदी में प्लास्टिक और अन्य कचरे न फेंकने का आग्रह किया। उन्होंने मां गंगा को प्राचीन पुराणों से भी जोड़ा और स्थानीय मछुआरों से अंधाधुंध मछली पकड़ने से बचने को कहा। इसके अलावा बाली थाने के सब इन्स्पेक्टर ने भी कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। मात्स्यिकी, हिलसा और डॉल्फिन संरक्षण के प्रति स्थानीय निवासियों के साथ-साथ 52 मछुआरों, और महिला मत्स्य पालकों को भी जागरूक किया गया और एक जन जागरूकता अभियान चलाया गया।

पश्चिम बंगाल के महिला मछुआरों ने हुगली नदी में रैन्चिंग कार्यक्रम में लिया भाग: सिफ़री द्वारा की गई पहल

आईसीएआर- केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने "नमामि गंगे" परियोजना के तहत 9 मई 2023 को हुगली, पश्चिम बंगाल के बालागढ़ और त्रिबेनी में **"नैशनल रैन्चिंग कार्यक्रम-2023"** का आयोजन किया। 5 अप्रैल 2023 को नवद्वीप, पश्चिम बंगाल से इस कार्यक्रम की सूचना हुई। अप्रैल से मई, 2023 की अवधि के दौरान 11.5 लाख से अधिक अंगुलिमीनों को गंगा में छोड़ा गया । इस कार्यक्रम का लक्ष्य 22 लाख अंगुलिमीनों को गंगा में छोड़ना हैं ताकि मछली का स्टॉक बढ़ाया जा सके। सिफ़री ने पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के बालागढ़ (2.0 लाख) और त्रिबेनी (2.1 लाख) में कुल 4.1 लाख उन्नत भारतीय मेजर कार्प के अंगुलिमीनों को निषेचित किया। त्रिबेनी के कार्यक्रम में सहायक मत्स्य अधिकारी, श्री तन्मय दास और स्थानीय प्राधिकरण के सदस्यों ने भाग लिया। सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के.दास ने गंगा नदी के महत्व पर प्रकाश डाला और नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत सिफ़री द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने मछली पकड़ने की अंधाधुंध प्रथाओं से बचने और डॉल्फिन सहित गंगा की जैव विविधता के संरक्षण के लिए सभी को जागरूक किया। इसके साथ ही डॉ. दास ने मछुआरों और स्थानीय निवासियों से मां गंगा के संरक्षण के लिए परिश्रम करने का आग्रह किया। स्थायी मत्स्य पालन, हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण के प्रति स्थानीय निवासियों के साथ-साथ 100 से अधिक स्थानीय मछुआरों और महिला मछुआरों को शामिल करते हुए एक जन जागरूकता अभियान भी चलाया गया। इस कार्यक्रम में नमामि गंगे परियोजना के सदस्यों के साथ सिफ़री के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

पश्चिम बंगाल के मत्स्य मंत्री द्वारा किया गया प्रथम केज कल्चर का उद्घाटन

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी) बैरकपुर, कोलकाता ने पश्चिम बंगाल सरकार के मात्स्यिकी विभाग के सहयोग से पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले के कंगसाबती जलाशय में आदिवासी मछुआरे की आजीविका में वृद्धि के लिए केज कल्चर की शुरुआत की है, जो इस तरह का पहला कदम है ।

आईसीएआर-सिफरी के "जीआई केज बैटरी" का उद्घाटन मछली अंगुलिमिनों को रिहा करके 16 मई 2023 को किया गया । मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे पश्चिम बंगाल सरकार के माननीय मत्स्य मंत्री श्री बिप्लब रॉय चौधरी, सम्मानित अतिथि के रूप में माननीय राज्य खाद्य और पूर्ति मंत्री श्रीमती ज्योत्सना मंडी भी कार्यक्रम में उपस्थित थी । पश्चिम बंगाल मत्स्य विभाग के सचिव श्री अवनींद्र सिंह, आईएएस, और संस्थान के निदेशक डॉ बि. के. दास, और अन्य गणमान्य अतिथियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई ।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय मंत्री श्री बिप्लब रॉय चौधरी ने सिफरी केज कल्चर तकनीक की सराहना की, जो इस जलाशय के मछुआरों की आजीविका के मुद्दों को हल करने में मदद करेगी।

माननीय राज्य खाद्य और पूर्ति मंत्री श्रीमती ज्योत्सना मंडी ने जिले के आदिवासी मछुआरों से इन ऐतिहासिक कार्यक्रमों में हाथ मिलाने का आग्रह किया, जो न केवल उनकी पोषण सुरक्षा को संबोधित करेगा बल्कि उन्हें अधिक व्यावहारिक रूप से आजीविका सहायता भी प्रदान करेगा। सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास, निदेशक ने पश्चिम बंगाल में इस फ्लैग शिप कार्यक्रम की सफलता के प्रति एकजुटता प्रदर्शित करते हुए गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया।

पश्चिम बंगाल के मत्स्य पालन विभाग के सचिव श्री अवनींद्र सिंह, आईएएस ने बताया कि दो साल पहले बनाई गई यह केज कल्चर परियोजना आखिरकार साकार हो गई ।

कार्यक्रम में जिले के 200 आदिवासी मछुआरों के अलावा, मत्स्य पालन विभाग के संयुक्त निदेशक, उप निदेशक और सहायक निदेशक ने भाग लिया। इन गणमान्य व्यक्तियों द्वारा केज का दौरा और उसमें मछली के बीजों का भंडारण किया गया।

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, ने कुलतली सुंदरबन में महिला मत्स्यजीवी सम्मेलन का आयोजन किया

सुंदरबन के अधिकतर निवासी मत्स्य पालन और संबद्ध गतिविधियों में जुड़े हुए हैं। पर पिछले 4 वर्षों में प्राकृतिक आपदाओं जैसे, अम्फान,

बुलबुल, फानी, यास जैसे चक्रवातों ने यहाँ की ग्रामीण जनता विशेषकर मछुआरों की आजीविका को बुरी तरह प्रभावित किया है और उनकी आय के साधन प्रायः समाप्त हो चुके हैं। इस ग्रामीणों के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) सदैव ही विस्तार तथा जन-जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से सहयोग देता रहा है।

पिछले 10 वर्षों में, सिफ़री के मार्गदर्शन में सुंदरबन वासियों ने घर के आँगन में स्थित तालाब और नहर में मछली और सजावटी मछली पालन की शुरुआत की है। सिफरी ने सुंदरबन के विभिन्न स्थलों जैसे गोसाबा,

हिंगलगंज, कोचुखाली, आमतोली, गंगासागर, बाली द्वीप, नामखाना, काकद्वीप और कुलतोली में मछुआरों की आजीविका वृद्धि हेतु कई पहल की है जिससे लाभार्थियों के लिए वैकल्पिक आजीविका का सृजन हुआ है। और उनकी वार्षिक आय में भी काफी वृद्धि हुई है। इसी क्रम में सिफ़री ने दिनांक 19 मई 2023 को सुदरबन के कुलतोली में महिला मत्स्यजीवी सम्मेलन-2023 का आयोजन किया जिसमें अनुसूचित जाति /आदिवासी योजना के तहत इन समुदायों की ऐसे 500 महिला मछुआरों को आदान वितरित किए गए जिनके घर के आँगन में 0.02

हेक्टेयर से 0.04 हेक्टेयर तक के तालाब उपलब्ध हैं। संस्थान के इस प्रयास से आजीविका वृद्धि के साथ महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में भी सहायता मिलेगी। यह कार्यक्रम कुलतोली मिलनतीर्थ सोसायटी, दक्षिण 24 परगना के सहयोग से आयोजित किया गया जिसमें सुंदरबन के गोसाबा और बासंती ब्लॉक से लगभग 2500 महिला-मछुआरा उपस्थित हुईं। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, और महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, भारत सरकार ने शोभा बढ़ाई और जिन्होंने अपने वक्तव्य में महिला लाभार्थियों को मछली पालन हेतु बहुत प्रेरित किया। इस अवसर पर कोलकाता स्थित परिषद के अन्य संस्थानों के निदेशक जैसे डा गौरंगा कार, निदेशक, भाकृअनुप-क्रिजाफ; डॉ. डी. बी. शाक्यवार, निदेशक, भाकृअनुप-निनफेट और डॉ. प्रदीप दे, निदेशक, अटारी, कोलकाता उपस्थित थे। यह कार्यक्रम सिफ़री के निदेशक, डॉ. बि .के. दास और 'टीम सिफरी' द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था। वर्तमान वर्ष में संस्थान का लक्ष्य 2000 महिला मछुआरों को प्रशिक्षण तथा आदान वितरण के माध्यम से स्व-निर्भर बनाना है।

'नमामि गंगे' परियोजना के तहत बिहार के भागलपुर जिले में रैन्चिंग कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 23.05.23 को 'नमामि गंगे' परियोजना के तहत "राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2023" के एक हिस्से के रूप में, भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर ने बिहार के भागलपुर जिले के प्रसिद्ध विक्रमशिला डॉल्फिन अभयारण्य के पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र के बाहर, सुल्तानगंज घाट में रैन्चिंग कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में बिहार के मत्स्य विभाग के कर्मचारी, सिफ़री के वैज्ञानिक, स्थानीय मछुआरे, स्थानीय पंचायत प्रमुख, प्रेस और मीडिया कर्मी उपस्थित थे । कार्यक्रम 'नमामि गंगे' परियोजना के तहत सिफ़री के निदेशक और प्रधान अन्वेषक डॉ. बि .के. दास के मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण में आयोजित किया गया। आयोजन के दौरान भारतीय मेजर कार्प (कतला, रोहू, और मृगल) की 2.0 लाख उन्नत अंगुलीमीनों को गंगा नदी में छोड़ा गया।

सिफरी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एस. सामंत ने रैन्चिंग कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि अब तक सिफरी ने पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड और उत्तराखंड में गंगा नदी के विभिन्न हिस्सों में 84 लाख से अधिक उन्नत अंगुलीमीनों का रैन्चिंग किया है। बिहार मत्स्य विभाग के डीडीएफ श्री शैलेंद्र कुमार, मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे और रैन्चिंग द्वारा सिफ़री में किए गए प्रयासों की सराहना की, जिससे अंततः गंगा नदी के मछली उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी।

इस अवसर पर मत्स्य विभाग के अन्य कर्मचारियों, स्थानीय पंचायत प्रमुख, मत्स्य सहकारी प्रतिनिधि ने अपने विचार सांझा किए और स्थानीय मछुआरों की आजीविका में सुधार के रूप में सिफ़री के योगदान को स्वीकार किया। रैन्चिंग कार्यक्रम के साथ-साथ डॉल्फिन, मछली और हिलसा मत्स्य पालन पर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय निवासियों सहित 80 सक्रिय मछुआरों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। सिफ़री के 'नमामि गंगे' टीम ने समग्र कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजित किया।

आईसीएआर-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान में आयोजित TEZ-2022 में संस्थान खेल दल द्वारा शानदार प्रदर्शन

खेल दल में संस्थान से कुल 29 प्रतिभागियों ने चार दिवसीय आईसीएआर जोनल स्पोर्ट्स मीट में भाग लिया, जो 24-27 अप्रैल, 2023 तक आईसीएआर-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली, यूपी में आयोजित किया गया था।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् स्पोर्ट्स मीट का प्राथमिक लक्ष्य देश में किसी भी स्तर पर कठिन चुनौतियों से निपटने के लिए उत्साह, सहनशक्ति और टीम वर्क को बढ़ावा देना है। आईसीएआर खेल योजना 1979 में संगठन की स्वर्ण जयंती मनाने के लिए शुरू की गई थी। उस समय से, यह कई संस्थानों में बारी बारी से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा आयोजित की जा रही है। आईसीएआर में खेल प्रक्रिया को व्यवस्थित करने के लिए संस्थान मुख्यालय में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। संस्थान स्तर पर अर्हता प्राप्त करने के बाद, एथलीट जोनल स्तर पर आगे बढ़ते हैं। अंतर-क्षेत्रीय अंतिम प्रतियोगिता प्रतिभागियों के रूप में विभिन्न क्षेत्रीय स्तरों के विजेताओं के साथ चुने गए संस्थानों में से एक में आयोजित की जाती है।

संस्थान के खेल दल ने व्यक्तिगत और टीम गतिविधियों में प्रतिस्पर्धा की, जिसमें दौड़, शॉट-पुट, भाला फेंक, डिस्कस-थ्रो, फुटबॉल, वॉलीबॉल (स्मैशिंग), क्रिकेट, बैडमिंटन (एकल और युगल), कैरम, शतरंज और अन्य शामिल थे। . सीआईएफआरआई के एथलीटों ने शॉट-पुट, भाला फेंक, बैडमिंटन एकल और युगल स्पर्धाओं में चार पदक (3 स्वर्ण और एक रजत) जीते। उन प्रतियोगिताओं में डॉ. सजीना ए.एम., डॉ. सुमन कुमारी और डॉ. अंजना एक्का ने जीत हासिल की। खेलों में समग्र भागीदारी संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास के प्रत्यक्ष अवलोकन और नेतृत्व में थी। गतिविधियों के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक डॉ. दिबाकर भक्त को खेल दल का के चीफ -डी-मिशन (सीडीएम) और तकनीकी सहायक श्री कौशिक मंडल को प्रबंधक के रूप में नामित किया गया।

बिहार के मुंगेर के मछली किसानों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 16-22 मई, 2023 के दौरान बिहार के मुंगेर जिले के मछली किसानों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन प्रबंधन" पर 7-दिवसीय योग्यता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 (तीस) किसान शामिल हुए। अंतर्स्थलीय जल में मत्स्य पैदावार बढ़ाने के लिए तकनीकी जानकारी और टिकाऊ प्रबंधन रणनीति का मूल्यांकन करने के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। उद्घाटन कार्यक्रम में डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से अपना ज्ञान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. दास ने मत्स्य पालन के माध्यम से पिछवाड़े के तालाबों सहित कम उपयोग किए जाने वाले जल संसाधनों का वैज्ञानिक तरीके से उपयोग करने पर जोर दिया, जो आजीविका में सुधार के लिए पर्याप्त गुंजाइश प्रदान करता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तालाब निर्माण और प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन और हैचरी प्रबंधन, मछली रोग प्रबंधन सहित समग्र मछली संस्कृति, ब्रूडस्टॉक प्रबंधन, एकीकृत मछली पालन, मछली चारा प्रबंधन और सजावटी मछली खेती और मत्स्य पालन उद्यमों के आर्थिक मूल्यांकन जैसे विभिन्न विषयों पर था। इसके साथ ही, जल गुणवत्ता मापदंडों, मछली चारा तैयार करने और प्रबंधन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया है। इसके अलावा, प्रशिक्षण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में पूर्वी कोलकाता वेटलैंड और सजावटी मछली बाजार, कोलकाता, आईसीएआर-सीआईएफए फील्ड स्टेशन, कल्याणी और कलना, कोलकाता में मछली फार्म की यात्रा का आयोजन किया गया। इसके अलावा, प्रशिक्षुओं को मुख्यालय में सजावटी मछली पालन इकाई और बायोफ्लॉक कार्यात्मक इकाई का उन्मुखीकरण दिया गया।

समापन सत्र 22 मई, 2023 को आयोजित किया गया था, जिसमें डॉ. श्रीकांत सामंत, प्रमुख, आरईएफ, डॉ. एम. ए. हसन, प्रमुख, एफईएम और डॉ. मलय नस्कर, प्रभारी प्रमुख, एफआरएआई ने भाग लिया। किसानों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से काफी संतुष्टि व्यक्त की। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए. रॉय, श्री गणेश चंद्रा, श्री प्रणब गोगोई और श्री सुजीत चौधरी द्वारा डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी के मार्गदर्शन में किया गया।

गंगटोक में 'सिक्किम के खुले जल में मत्स्य पालन के प्रबंधन' पर परस्पर संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन एवं डिकचू जलाशय का दौरा किया

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी पालन अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), बैरकपुर ने मत्स्य पालन निदेशालय (डीओएफ), 'सिक्किम सरकार के सहयोग से गंगटोक में 'सिक्किम के खुले जल मत्स्य पालन के प्रबंधन' पर एक परस्पर संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन 29.05.2023 को सिक्किम में किया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान , बैरकपुर और श्री एन.जसवंत, आईएफएस, मत्स्य पालन निदेशक, सिक्किम के समग्र मार्गदर्शन में किया गया। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, प्रमुख (कार्यवाहक), आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में डॉ. बि.के. दास, श्री एन. सुश्री नीति शर्मा, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी; मत्स्य पालन निदेशालय, सिक्किम के अधिकारी; एमएससी एसआरएम विश्वविद्यालय के छात्र, मछुआरे, मत्स्य किसान, सिक्किम एंगलर्स एसोसिएशन के सदस्य। स्थानीय प्रिंट और मीडिया के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

दिन भर चलने वाली कार्यशाला का उद्घाटन सत्र श्री वाई. शर्मा, सहायक निदेशक, मत्स्य पालन निदेशालय, सिक्किम के स्वागत भाषण और शुभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ शुरू हुआ। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने कार्यशाला का उद्देश्य समझाया। मत्स्य पालन निदेशक, सिक्किम ने डीओएफ की

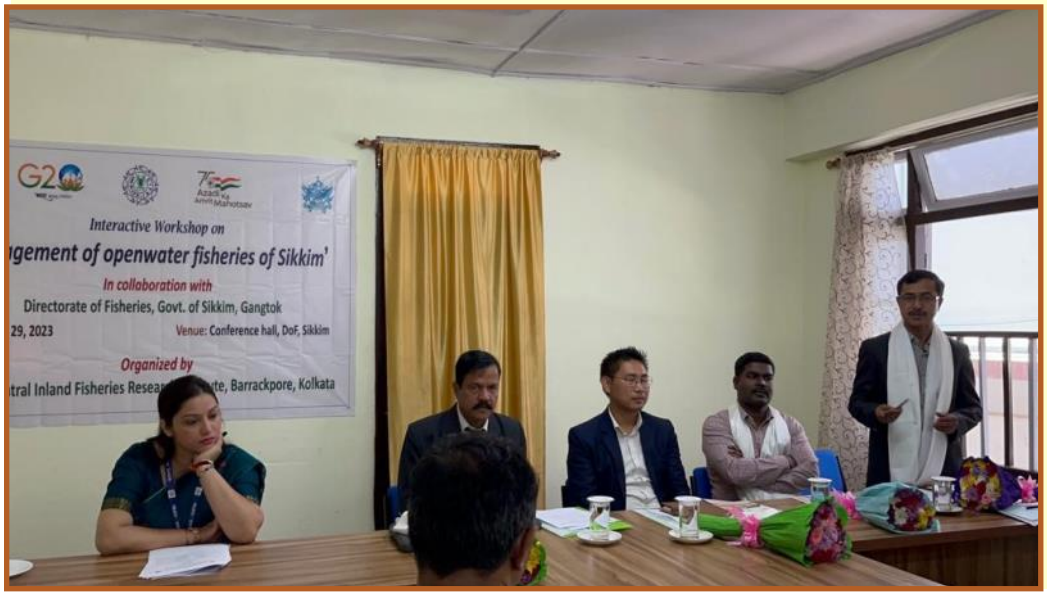

हालिया गतिविधियों पर प्रकाश डाला और राज्य के खुले जल मत्स्य पालन के सामने आने वाले प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डाला। उन्होंने राज्य में खुले जल में मत्स्य पालन विकास के लिए आईसीएआर-सिफरी के साथ तकनीकी सहायता और संभावित सहयोग का आह्वान किया। संस्थान के निदेशक ने डीओएफ द्वारा उठाए गए मुद्दों पर चर्चा की और अनुरोध के अनुसार

निदेशालय को तकनीकी सहायता प्रदान करने पर सहमति व्यक्त की। उन्होंने कहा कि राज्य में खुले जल में मत्स्य पालन प्रबंधन के लिए आईसीएआर-सिफरी और डीओएफ, सिक्किम ज्ञान भागीदार हो सकते है। एसआरएम विश्वविद्यालय ,सिक्किम के डॉ. थंगापांडियन ने प्राणीशास्त्र के एमएससी कार्यक्रम के बारे में बताया। उन्होंने राज्य में मत्स्य पालन अनुसंधान के कुछ क्षेत्रों पर चर्चा की और मत्स्य पालन विभाग, सिक्किम और आईसीएआर-सीआईएफआरआई के साथ सहयोग की मांग की। तकनीकी सत्र के दौरान, आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बी.के. दास ने सहयोगात्मक कार्य कार्यक्रमों सहित पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न राज्यों में अंतर्देशीय खुले जल मत्स्य पालन में संस्थान द्वारा की गई हालिया गतिविधियों के बारे में बताया। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने आईसीएआर-सिफरी से अनुसंधान सहायता के लिए डीओएफ, सिक्किम के पिछले सुझावों को प्रस्तुत किया और डीओएफ के साथ सहयोगात्मक कार्य के संभावित क्षेत्रों की रूपरेखा प्रस्तुत की। सिक्किम के मत्स्य पालन निदेशक श्री एन.जसवंत ने राज्य में खुले जल में मत्स्य पालन के विकास के लिए संस्थान से अनुसंधान सहायता मांगी। श्री. एन. गुरुंग, सहायक निदेशक और श्री आर. प्रधान, राज्य डेटा-सह-एमआईएस प्रबंधक, डीओएफ ने मत्स्य पालन निदेशालय की गतिविधियों और सिक्किम की नदियों से मछली पकड़ने के अनुमान के लिए मत्स्य पालन निदेशालय द्वारा हाल की पहल की प्रस्तुति दी।

परस्पर संवादात्मक सत्र के दौरान, सिक्किम के मत्स्य पालन निदेशक, श्री एन.जसवंत ने राज्य में आने और केंद्रित तरीके से विषय पर बातचीत करने की आईसीएआर-सिफरी की पहल की सराहना की। उन्होंने स्वदेशी मछली प्रजातियों के संरक्षण के बारे में चिंता व्यक्त की और आईसीएआर-सीआईएफआरआई से राज्य की झीलों और जलाशयों में बाड़े की संस्कृति शुरू करने का अनुरोध किया क्योंकि यह राज्य के लिए एक नई तकनीक होगी। संस्थान के वैज्ञानिकों, डीओएफ के अधिकारियों और अन्य हितधारकों ने सत्र में सक्रिय रूप से भाग लिया। अपनी समापन टिप्पणियों में, मत्स्य पालन निदेशक, सिक्किम और निदेशक, आईसीएआर-सिफरी ने राज्य के खुले जल मत्स्य पालन में सहयोगात्मक कार्यक्रम शुरू करने पर सहमति व्यक्त की। सुश्री नीति शर्मा, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिफरी, छेत्रीय केंद्र,

गुवाहाटी की अध्यक्षता में दिन भर चली कार्यशाला सिक्किम के मत्स्य पालन के अतिरिक्त निदेशक श्री सी.एस. राय के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुई।

जलाशय में बाड़े की संस्कृति शुरू करने की संभावना का पता लगाने के लिए 30.05.23 को डिकचू जलाशय, सिक्किम का एक संयुक्त क्षेत्र दौरा किया गया था। आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन अनुसंधान संस्थान के निदेशक, मत्स्य पालन निदेशक, सिक्किम ने आईसीएआर-सीआईएफआरआई और डीओएफ अधिकारियों की वैज्ञानिक टीम के साथ जलाशय में संभावित स्थलों का दौरा किया। संयुक्त टीम को एनएचपीसी लिमिटेड, तीस्ता-वी पावर स्टेशन के समूह महाप्रबंधक श्री चित्त रंजन दास और उनकी टीम द्वारा जलाशय के विवरण सहित तीस्ता-वी परियोजना के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी दी गई। संस्थान के निदेशक ने चॉकलेट महासीर (*नियोलिसोचिलस हेक्सागोनोलेपिस*) के ब्रूडस्टॉक विकास और संरक्षण की संभावना के बारे में चर्चा की, जो सिक्किम की राज्य मछली है। सिक्किम के मत्स्य पालन निदेशक ने महसूस किया कि जलाशय में बाड़े की संस्कृति शुरू करने से राज्य के युवाओं को इस गतिविधि को करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। संयुक्त टीम ने इलाके के दो वाणिज्यिक ट्राउट फार्मों का भी दौरा किया, जिसे निदेशालय द्वारा समर्थित किया गया था।

भागलपुर, बिहार के मत्स्य पलकों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता निर्माण

भागलपुर बिहार में गंगा नदी के तट पर है और तीन प्रमुख नदियों से प्रभावित है: कोसी नदी और उसकी सहायक नदियाँ, गंगा नदी और उसकी सहायक नदियाँ, और घाघरा नदी और उसकी सहायक नदियाँ। जिले के समृद्ध जलीय संसाधनों के बावजूद, मांग को पूरा करने के लिए यहां पर्याप्त मछली का उत्पादन नहीं किया जाता है। मछुआरों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य से कौशल-विकास और क्षमता-निर्माण पहल के हिस्से के रूप में, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर ने 24-30 मई, 2023 तक "अंतर्देशीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया है। 30 प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागलपुर के मछली किसानों और राज्य मत्स्य विभाग के एक अधिकारी ने भाग लिया।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक आईसीएआर-सिफरी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया और स्थायी जीवन सुरक्षित करने के लिए मछुआरों को अंतर्देशीय मत्स्य प्रबंधन के कई तत्वों के बारे में सीखने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने मछुआरों से प्रौद्योगिकी के बारे में सीखकर और उसका उपयोग करके उत्पादन और उत्पादकता को अधिकतम करने के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों की जांच करने का आग्रह किया। डॉ. दास ने प्रशिक्षुओं को भारत की अंतर्देशीय मत्स्य पालन में सुलभ नई उद्यमिता के बारे में भी जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों और अंतर्देशीय मत्स्य पालन प्रशासन के बीच मौजूद ज्ञान, कौशल और अंतर को पाटना था। पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान शामिल थे, अंतर्देशीय मत्स्य पालन, तालाब निर्माण और प्रबंधन सहित मछली पालन, मिट्टी और जल रसायन, प्रेरित प्रजनन, नर्सरी और पालन तालाब प्रबंधन, जीवित मछली बीज परिवहन, समग्र मछली पालन, सजावटी मत्स्य पालन, बाड़े की संस्कृति, अन्य विषयों के अलावा मछली चारा प्रबंधन, रोग प्रबंधन, आर्थिक मूल्यांकन और प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना का सामान्य अवलोकन। क्षेत्रीय यात्राओं के हिस्से के रूप में आईसीएआर-सीआईएफए कल्याणी मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड्स (ईकेडब्ल्यू), कालना प्रगतिशील मछली फार्म, सजावटी मछली बाजार और अन्य स्थानों का दौरा आयोजित किया गया। विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के अलावा, जैसे बुनियादी जल गुणवत्ता पैरामीटर, स्थानीय रूप से सुलभ फ़ीड सामग्री का उपयोग करके मछली फ़ीड की तैयारी, मछली रोगजनकों की पहचान और उनके संबंधित उपचारात्मक उपाय इत्यादि। और प्रतिभागियों को संस्थान के रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), बायो-फ्लोक इकाइयों, सजावटी हैचरी इकाइयों और फ़ीड मिल तक पहुंच प्राप्त थी। फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं की सामान्य खुशी की पुष्टि और उनके जल संसाधनों में नियोजित किए जाने वाले उनके ज्ञान का दायरा प्रमुख रहा। आरईएफ प्रभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस. सामंता ने किसानों को अपने उत्पादन एकीकरण के स्तर को बढ़ाने के लिए जो कुछ सीखा था उसे लागू करने के लिए प्रोत्साहित करके कार्यक्रम का समापन किया। गणेश चंद्रा, दिबाकर भक्त, कैंसियाल जॉनसन और विकास कुमार ने श्री सुजीत चौधरी, डॉ. अविषेक साहा और श्री मनबेंद्र रॉय की सहायता से प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय किया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- पिछले 20 वर्षों में डुम्बूर जलाशय, त्रिपुरा का औसत मछली उत्पादन 119 किलोग्राम/हेक्टेयर/वर्ष रहा है। जलाशय ने 1978-79 से 1992-93 की तुलना में 2006-07 से 2021-22 के दौरान मछली उत्पादन में 257% की वृद्धि देखी गयी। अध्ययन यह बताते हैं कि इसका कारण जलाशय में मछली संचयन का उच्च घनत्व है। इस जलाशय में 55 मछली प्रजातियों की उपस्थिति दर्ज की गई।
- देश के 8 छोटे जलाशयों (पश्चिम बंगाल में 5, ओडिशा में 2 और कर्नाटक में 1) के लिए अनुमनित संभावित मछली उपज 419-718 किलोग्राम/हेक्टेयर के बीच था। इसके लिए तदनुसार प्रत्येक जलाशय के लिए संचयन घनत्व 850 से 1500 अंगुलिका प्रति हेक्टेयर का सुझाव दिया गया।
- नेत्रावती-गुरुपुर मुहाने की सतही तलछट में उपस्थित कार्बन अवशेषों के आकलन से पता चला कि गुरुपुर खंड में कार्बन का स्तर बहुत अधिक है, जिससे कार्बन-डाई-ऑक्साइड (CO_2) उत्सर्जन का खतरा बना हुआ है।
- मई 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग 15.37 टन था, जो मई 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में लगभग 143% की वृद्धि को दर्शाता है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 3 मई, 2023 को राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन-सिफरी, चरण- II परियोजना की समीक्षा बैठक में आभाशी तौर पर भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 8 मई 2023 को नई दिल्ली में नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण की 94वीं बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 22 मई 2023 को कृषि विज्ञान केंद्र, कल्याण पुरुलिया (पश्चिम) में 'पूर्वी भारत के छोटानागपुर पठार क्षेत्र का अवलोकन और इसकी उत्पादन क्षमता' विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 29 अप्रैल 2023 को बैरकपुर में सुंदरबन ड्रीम्स के सहयोग से मछुआरों के क्षमता विकास और आजीविका वृद्धि के लिए एफपीओ/एफपीसी बैठक का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 42 एफपीओ ने भाग लिया।
- संस्थान ने निदेशक, मत्स्य पालन विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से दिनांक 16 मई 2023 को पश्चिम बंगाल के कंसावती जलाशय में पिंजरा पालन तकनीक की शुरुआत की। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों सहित पश्चिम बंगाल सरकार से श्री बिप्लब रॉय चौधरी, मत्स्य पालन मंत्री; श्रीमती ज्योत्सना मंडी, राज्य मंत्री, खाद्य और आपूर्ति और श्री अवनींद्र सिंह, आईएएस, सचिव, मत्स्य पालन ने पिंजरे में अंगुलिकाओं को छोड़ इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- संस्थान ने दिनांक 01 मई, 2023 को मात्स्यिकी महाविद्यालय के 42 छात्रों (B.F.Sc. - अंतिम वर्ष) के लिए एक एक्सपोज़र विजिट का आयोजन किया। इसमें छात्रों ने अनुसंधान गतिविधियों के साथ-साथ संस्थान की रंगीन मछली पालन इकाई सहित प्रयोगशाला सुविधाओं का संदर्शन किया।
- संस्थान द्वारा दिनांक 08 मई, 2023 को बीएससी तृतीय वर्ष की प्राणीशास्त्र विभाग, रामानुज गुप्ता डिग्री कॉलेज, सिलचर, असम के 23 छात्रों के लिए एक और एक्सपोज़र विजिट आयोजित की गई।
- संस्थान ने दिनांक 9 मई 2023 को पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के बालागढ़ और ट्रिबेनी में मछली रोग निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 100 मछली किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान ने ने दिनांक 16 मई, 2023 को आर्मी पब्लिक स्कूल, बैरकपुर के स्कूली छात्रों के लिए एक्सपोज़र विजिट का आयोजन किया।
- संस्थान ने दिनांक 16-22 मई, 2023 के दौरान मुंगेर, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर मत्स्य विभाग, बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बिहार के मुंगेर जिले के 30 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 17 मई, 2023 को बिधाननगर कॉलेज, साल्टलेक, पश्चिम बंगाल के जूलॉजी (ऑनर्स) बीएससी तृतीय वर्ष के 16 छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया। इन छात्रों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का संदर्शन किया।

विविध

- संस्थान ने दिनांक 13 मई 2023 को "मछली के लिए प्राकृतिक उत्पत्ति की सिनर्जिस्टिक प्रतिरक्षा बढ़ाने वाली रचनाएं और उसकी तैयारी की विधि" पर एक पेटेंट (आवेदन संख्या 202331033791) दायर किया है ।
- सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा मत्स्य पालन निदेशालय, सिक्किम सरकार, गंगटोक के सहयोग से दिनांक 29-30 मई 2023 को "सिक्किम में खुलाजल में मात्स्यिकी प्रबंधन" पर संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया था।
- फरक्का के अपस्ट्रीम में कुल 60 हिल्सा मछली को छोड़ा गया जिनमें से 3 मछलियों को उनके अभिगमन मार्ग अध्ययन के लिए टैग किया गया था। हिल्सा का अधिकतम और न्यूनतम वजन क्रमशः 182 ग्राम और 16 ग्राम था ।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

THE KALINGA CHRONICLE
Daily Edition: R.N.I. No: ODIENG/2013/52530
Popular People's Daily of Odisha

ICAR-CIFRI organized Mahila Matsyajeebi Sammelan at Kultali Sundarban

Kolkata: ICAR-Central inland fisheries Research Institute Organised Mahila Matsyajibi Sammelan (Women Fishers Meet) at Kultali, Sundarban, West Bengal in collaboration with KultaliMilantirth Society on 19 May 2023. Dr. Himanshu Pathak, Secretary, Department of Agricultural Research and Education, Govt. of India and Director General, Indian Council of Agricultural Research inaugurated the meetas the Chief Guest.Other distinguished guests were Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, Dr.Gouranga Kar, Director, ICAR-CRIJAF and Dr. D. B. Shakyawar, Director, ICAR-NINFET.

Dr. Pathak in his address as chief guest in his address said that rural population of Sundarban is suffering due to continuous natural disaster like cyclones. He emphasised that excellent and exceptional work carried out by ICAR-CIFRI for MahilaMatsyajeebiSammelan, more than four thousand five hundred women fishers are present here and ICAR-CIFRI will adopt 500 women fishers under SCSP and STC. He stressed that all the ICAR institutes and Krishi Vigyan Kendra of this region will whole heartedly support the farmers of Sundarban in implementing new agricultural technology and livelihood enhancement. I forward to the faraway places like Sundarban. Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI while welcoming chief guest and other dignitaries said that in last 10 years, CIFRI has introduced interventions like backyard pond culture, canal fisheries and ornamental fish farming to support the livelihood of the targeted beneficiaries of Gosaba, Hingalgunj, Kochukhali, Amtoli, Gangasagar, communitiesof Sundarbans by providing technological inputs for rejuvenating their livelihood through fish farming under the SCSP/STC programme.These interventions have led to alternative livelihood generation of the beneficiaries a annual income been in significantly. Dr.Gauran Director, and assured them of possible help from ICAR institutes.

Honourable Secretary, DARE & DG, ICAR distributed fisheries inputs like fingerlings, ICAR-CIFRI Cagegrow feed etc. to 500 SC and ST women fish-farmerswho have backyard ponds with an average area ranging from 0.02 ha to 0.04 ha in their household.These women beneficiaries have been selected from a vast area covering 38 hamlets under 17 GPs of two Community Development Blocks namely GosabaandBasanti of Sundarbans.

More than five thousand fishers including 4500 women fishers participated in the meet. Officers and staff members of state departments, ICAR

Fish seeds for 500 women

DEBRAJ MITRA

Calcutta: Five hundred women from marginalised families in the Sunderbans were given fish seeds and feed at a programme in Kultali on Friday.

The women were from around 40 villages in two blocks, Basanti and Gosaba.

Each of them, who have a pond in their backyard, on Friday received 8kg of fish seed and almost a year's feed.

"The fish are Indian major carps like rohu, catla and mrigal. The fish fingerlings will grow into a marketable size within eight months. But we don't want the beneficiaries to sell the entire produce. They are expected to keep some for domestic consumption and sell the rest," said Aparna Roy, senior scientist at the Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI).

The Barrackpore-headquartered institute has been supporting the vulnerable communities of the Sunderbans with fish farming under institute, participated in Friday's programme.

Aruna Mondal, who lives in Choradanga village in Kultali, received fish seeds and feed from the institute in 2021 and 2022.

She has been selling fish reared in her pond at the wholesale market in Canning. "I make around Rs 20,000 a year from this," she said on Friday.

Before 2021, Mondal and her family members would go for fishing in rivers, which was fraught with danger and uncertainty. Ditto for many other women who got assistance on Friday.

The Sunderbans villages are vulnerable to saltwater inundation during storms and tidal waves. Villagers need to drain out water from their ponds. The institute has also helped villagers with pumps to drain the saline water out.

The CIFRI works under the Indian Council of Agricultural Research. The institute "strives for knowledge-based management of inland open waters for sustainable fisher

सुंदरबन में 500 महिला मछुआरों को सिफरी ने दिया मछली पालन का उपकरण व साधन

कोलकाता/संवाददाता।

सुंदरबन की आबादी का एक बड़ा हिस्सा मत्स्य पालन और संबद्ध गतिविधियों में शामिल है। पिछले 4 वर्षों में अम्फान, बुलबुल, फानी, यास जैसे चक्रवातों तूफानों ने ग्रामीण आबादी की आजीविका को प्रभावित किया है। केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति उपयोजना कार्यक्रमों के तहत मछली पालन के माध्यम से उनकी आजीविका में सुधार के लिए तकनीकी सहायता प्रदान कर रहा है। पिछले 10 वर्षों में, सिफरी ने सुंदरबन के गोसाबा, हिंगलगंज, कोचुखली, अमतोली, गंगासागर, वाली द्वीप, नामखाना, काकद्वीप, कुलतोली के मछुआरों की आजीविका के सुधार हेतु घर के पिछवाड़े के तालाब में मछली पालन, नहर में मछली पालन और सजावटी मछली पालन जैसे कार्यसूची आरंभ की हैं। इन प्रयासों के फलस्वरूप इन लाभार्थियों को वैकल्पिक आय का साधन मिला हैं और उनकी वार्षिक आय में भी काफी वृद्धि हुई है। इसलिए, इस वर्ष सिफरी ने उनकी आजीविका में वृद्धि करने के लिए कमजोर समुदाय की अन्य 2000 महिलाओं को इस कार्यसूची के अंतर्गत लेने की योजना बनाई है, जिससे उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मदद मिलेगी। इस संबंध में, दक्षिण 24 परगना के कुलतोली में 'कुलतोली मिलन तीर्थ सोसाइटी' के सहयोग से 19 मई, 2023 को 2500 महिला-मछुआरे प्रतिभागियों को लेकर सिफरी ने एक 'महिला मत्स्यजीवी सम्मेलन' का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में, सिफरी ने 500 अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिला मछली-किसानों को मछली पालन के साधन वितरित किया, जिनके घर के पिछवाड़े में औसतन 0.02 हेक्टेयर से 0.04 हेक्टेयर तक का तालाब है। इन महिला लाभार्थियों को सुंदरबन के दो ब्लॉक गोसाबा और बासंती के 17 ग्राम पंचायतों के तहत 38 गांव से चुना गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक एवं सचिव (डीएआरई) डॉ हिमांशु पाठक। अन्य विशिष्ट अतिथियों के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे, आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि.के. दास, आईसीएआर-क्राइजाफ के निदेशक डॉ. गौरंगा कार, आईसीएआर-एनआईएनएफटीके निदेशक डॉ. डी. बी. शाक्यवार, और अटारी, कोलकाता के निदेशक डॉ. प्रदीप डे।

THE KALINGA CHRONICLE
Daily Edition: R.N.I. No: ODIENG/2013/52530
Popular People's Daily of Odisha

Inauguration of First Cage Culture in West Bengal by Fisheries Minister

Kolkata : ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI) Barrackpore, Kolkata in collaboration with Department of Fisheries, Government of West Bengal has initiated cage culture in Kangsabati Reservoir, Bankura district, West Bengal, which is first of its kind towards enhancing livelihood of tribal fishers of the district.

ICAR-CIFRI GI Cage battery was inaugurated on 16 May 2023 with releasing of fingerlings by Chief Guest Shri Biplob Roy Choudhury, honorable Ministries of Fisheries, Govt of West Bengal and Guest of honour Smt Jyotsna Mandi Honorable Minister of State, Food and Supplies, Govt of West Bengal in presence of Sh. Avanindra Singh, IAS, Secretary, Department of Fisheries, Govt. of West Bengal, Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI and other dignitaries.

Inaugurating the programme, Shri Biplob Roy Choudhury honorable Ministries has applauded ICAR-CIFRI's initiates with the proven Cage culture technology which would go a long way in resolving livelihood issues of the fishers of this reservoir.

Smt Jyotsna Mandi, Honorable Minister of state, Food and Supplies, Govt of West Bengal urged the tribal fishers of the district to join hands to these historical ventures which would not only address their nutritional security but also provides livelihood support to them in a more pragmatic manner.

Dr. B. K. Das Director, CIFRI welcomed the dignitaries on the cage site rendering solidarity towards the success of this flag ship programme in West Bengal.

The cage culture project which has been framed two years back, has finally got materialized in West Bengal as poised by Shri Avanindra Singh, IAS, Secretary, Department of Fisheries, Govt. of West Bengal.

The programme was attended by 200 tribal fishers of the district besides, officials of Collectorate, Joint Director, Deputy Director and Assistant Director of fisheries Govt. of West Bengal with the visit of cage site by the dignitaries and stocking fish seeds in cages.

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है